दिनांक : - 13-05-2020

कॉलेज का नाम : - मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम : - डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक : - प्रथम खंड (अनुशांगिक)

विषय : - प्रारंभिक इतिहास

इकाई : - तृतीय-चतुर्थ

पत्र : - प्रथम

अध्याय : - सिंधु घाटी की सभ्यता

(The Indus Valley civilization)

सिंधु घाटी सभ्यता की जानकारी एवं नामकरण -

मानव सभ्यता का प्राचीनतम रूप नदियों की घाटियों में बसे ग्रामों और नगरों में देखने को मिलता है। मिस्र में नाली नदी मेसोपोटामिया में दजला और फुरात नदियों तथा भारतवर्ष में सिंधु नदी की घाटी में लगभग पाँच या छः हजार वर्ष पूर्व उच्च कोटि की मानव-सभ्यता का विकास हुआ था।

Scanned with CamScanner

नदियों की घाटियों की उपजाऊ भूमि, कोमल मिट्टी और अधिक पैदावार, वर्षा की अधिकता और चारागाह की सुविधा तथा नदियों की घाटियों में प्राप्त विभिन्न धातुओं की प्रचुरता से नदियों की घाटियों में मानव-सभ्यता विकसित हुई। भारत वर्ष में सिंधु नदी की घाटी में एक उच्चकोटि की नगरीय सभ्यता का विकास हुआ था। सिंधु पंजाब, गुजरात, सौराष्ट्र आदि अनेक स्थलों के उत्खनन में इस सभ्यता के अवशेष मिले हैं। 1921 ई० तक इतिहासकारों की धारणा थी कि भारतवर्ष में सभ्यता का इतिहास आर्यों के आगमन के बाद प्रारंभ होता है यानी वैदिक सभ्यता ही भारत की प्राचीनतम सभ्यता है। लेकिन सिंधु नदी की घाटी में स्थित मोहनजोदड़ो, हड़प्पा आदि स्थलों की खुदाई में प्राप्त वस्तुओं के अवशेषों ने प्रमाणित कर दिया कि आर्यों की सभ्यता से पूर्व भारत में सिंधु नदी की घाटी में एक उच्च कोटि की नागरिक सभ्यता

विकसित हो चुकी थी, जो समकालीन मिस्र और मेसोपोटामिया की सभ्यता से अनेक क्षेत्रों में (भवन-निर्माण, नगर निर्माण योजना) अधिक विकसित थी। सिंधुघाटी की सभ्यता के संबंध में हमारी जानकारी मुख्यतः पुरातात्विक प्रमाणों पर आधारित है क्योंकि इस काल का कोई साहित्यिक साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। इस सभ्यता से सम्बंधित जो भी लेख मिले हैं उन्हें अभी तक सन्तोषद ढंग से पढ़ नहीं जा सका है। अतएव इस सभ्यता के विभिन्न पहलुओं के अध्ययन के लिए हमें उत्खनन में प्राप्त सामग्रियों और भवनों के अवशेषों पर निर्भर रहना पड़ता है। हड़प्पा-सभ्यता को जो स्वरूप आज हमारे सामने मौजूद है उसे प्रकाश में आने में बहुत समय लगा। 1875 ई० में प्रसिद्ध पुरातत्वेत्ता अलेक्जेन्डर कनिंघम का ध्यान हड़प्पा के पुरातात्विक अवशेषों की ओर आकृष्ट हुआ। यहां उन्हें एक लिपिबद्ध मुहर मिली थी। उन्हें भावनों के अवशेष भी मिले स्थान उपेक्षित ही रहा। 1922 ई० में राखालदास

बनर्जी तथा बाद में सर जॉन मार्शल, अर्नेस्ट मैके, काशी नाथ दीक्षित, दयाराम साहनी, एम० एस० वत्स, एन० जी० मजूमदार, सर आरिफल स्टीन, एच० हारग्रीव्ह्ज, पिगट, व्हिलर आदि अनेक पुरातत्वे-ताओं ने हड़प्पा, मोहनजोदड़ो तथा इस सभ्यता से सम्बद्ध अनेक स्थलों की खुदाई करके महत्वपूर्ण सामग्री एकत्र किये। उत्खननों में प्राप्त सामग्रियों से सिंधु सभ्यता के उदय, विस्तार, प्रकार, काल, विलय आदि अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश पड़ता है।

नामकरण – सिंधु घाटी सभ्यता के लिए मोटे तौर पर तीन नामों का प्रयोग किया जाता है। सिंधु सभ्यता, सिंधु घाटी की सभ्यता और हड़प्पा सभ्यता। इन तीनों शब्दावली का एक ही अर्थ है और प्रत्येक शब्दावली की एक विशिष्ट पृष्ठभूमि है। साधारणतः किसी सभ्यता का नामकरण उस स्थल के नाम पर किया जाता है जहाँ पहले-पहल उस सभ्यता

विशेष के अवशेष प्राप्त होते हैं। प्रारंभ में जब हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की उत्खनन से इस सभ्यता के बारे में पता चला तो यह अनुमान लगाया गया कि यह सभ्यता सिंधुघाटी तक ही सीमित थी। चूँकि इस सभ्यता के बारे में पता चला तो यह अनुमान लगाया गया कि यह सभ्यता सिंधु घाटी तक ही सीमित थी। चूंकि इस सभ्यता के अवशेष सर्वप्रथम सिंधुघाटी के बाहर दूर-दूर क्षेत्रों में भी पाये शब्दावली का प्रयोग किया गया। लेकिन बाद में इस सभ्यता के अवशेष मिले। तब इस सभ्यता का सही भौगोलिक विस्तार का संकेत देने के लिए सिंधुघाटी की सभ्यता जैसी शब्दावली अपर्याप्त सिद्ध हुई। अतएव हड़प्पा (जहाँ प्रारंभ में इस सभ्यता के अवशेष मिले थे) के नाम पर इस सभ्यता का नामकरण 'हड़प्पा सभ्यता' कर दिया गया।

सिंधु सभ्यता का भौगोलिक विस्तार (Geographical Extent) पुरातात्विक खोजों और उत्खननों के परिणाम स्वरूप सिंधु

सभ्यता का प्रसार क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत हो गया है। पश्चिमी पंजाब और सिंध में यह सभ्यता समान रूप से फैली हुई थी। इस सभ्यता का प्रभाव गंगा यमुना नर्मदा और ताप्ती नदियों की घाटियों तक था। उत्तर पूर्व में रोपड़ तक इसका प्रभाव था। गंगा की घाटी में भी इस सभ्यता के अवशेष मिले हैं। पूर्व में काठियावाड़ से पश्चिम में मकरान तक यह सभ्यता फैली हुई थी। राजस्थान में कालीबंगा और गुजरात में लोथल नामक स्थान में इस सभ्यता के स्थलों का पता चला है। हरियाणा में भी सिंधु-संस्कृतिकालीन स्थल मिले हैं। इनमें बनमाली, मीताथल और राखी गढ़ी महत्वपूर्ण है। सिंधु सभ्यता के स्थलों की संख्या अबतक 350 तक पहुँच गई। विद्वानों की धारणा है कि सिंधु सभ्यता के अंतर्गत विशाल प्रदेशों की व्यवस्था और शासन दो राजधानियों द्वारा किया जाता होगा।

प्रथम. पंजाब मे स्थित हड़प्पा उत्तर प्रदेश की राजधानी था और दूसरा. सिन्ध प्रदेश वैसे स्थानो को निवास के लिए चुना था जहाँ की जलवायु कपास और गेहूँ उपजाने के लिए उपयुक्त थी। सिंधु प्रदेश अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण जल तथा स्थल-मार्गो द्वारा विदेशो से सम्बंधित था। दक्षिण के समुद्र और उत्तर-पश्चिम के स्थल-मार्गों से सिंधुघाटी के निवासी विदेशो से सम्पर्क बनाये हुए थे। ऐसा अनुमान किया जाता है कि उनके व्यापारिक और सांस्कृतिक सम्बंध भी विदेशो से रहे होगे। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मेसोपोटामिया और मिस्र की सभ्यता के लोगो से सिंधु-सभ्यता के लोगो का सम्पर्क रहा होगा. ऐसा अनुमान किया जाता है।

सिंधु-सभ्यता के कुछ प्रमुख स्थल -

बलूचिस्तान :- यहां व्यापार मार्गों के साथ-साथ स्थल पाये जाते है। इनमे तीन स्थल महत्वपूर्ण माने जाते है,